CS(M) EXAM2012

G–DTN–M–NBJB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Important Note

Whenever a question is being attempted, all its parts/sub-parts must be attempted contiguously. This means that before moving on to the next question to be attempted, candidates must finish attempting all parts/sub-parts of the previous question attempted. This is to be strictly followed.

Pages left blank in the answer-book are to be clearly struck out in ink. Any answers that follow pages left blank may not be given credit.

Section—A

1. निम्नलिखित अवतरणक भावकें स्पष्ट करैत एकर काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट कए सप्रसंग व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 12×5=60

(क) मालति सफल जीवन तोर।
तोरे विरहे भूवन भमए
भेल मधुकर भोर॥
जातकि केतकि कत न अछ
कुसुम रस समान।
सपनहु नहि काहू निहारए
मधु कि करत पान॥
जकर हृदय जतए रहल
धसि पए ततहि जाए।
जेअओ जतने बान्धि निरोधिअ
निमन नीर समाए॥

(ख) नाव अरि लाव नहि, उतरक दाव नहि,
एक बुद्धि आब नहि, सागर अपारमे।
वीर अरि छोट नहि सङ्ग एकगोट नहि,
लङ्का लघुकोट नहि विदित संसारमे।
दनुज अवल नहि, पुरी गम्य थल नहि,
प्रदेश अमल्ल नहि युद्धक विचारमे॥
अहाँक समान नहि, वीर हनुमान नहि,
सर्व्वस्वक दान नहि तूल उपकारमे॥

(ग) पत्नी पञ्च पाण्डवक, द्रुपद-सुपुत्रि,
पति-प्राणा, कुलवधू कुरुक, सुकुमारि,
रति-लज्जाकर जनिकर अनुपम रूप,
पति-अज्ञात-वाससँ छथि असहाय,

जनि सुन्दर-सुविशाल-रसाल-सनाथ—
मालति, कुसुम-भार-नत, जकर सुगन्धि
लए-लए पवन करए जनमन आनन्द,
नियति-क्रमहि पाबए दुस्सह आघात
झंझानिलक, होअए आश्रय द्रुम-नष्ट,
शतशत मधुकर जत लुबुधल मधु-लोभ
भए असहाय सहए पशुपदक प्रहार,
कण्टकमय तृण-सङ्कुल भूमि लोटाए।
एहि विधि कृष्णा हतभागा सुकुमारि
मत्स्येशक अन्तःपुर कएल प्रवेश।

(घ) परम मेधावी कते बालक जत'
मूर्ख रहि हा गायटा चरबैत छथि
कते वाचस्पति कते उदयन जत
हाय! बनगोइठा बिछैत फिरैत छथि
तानसेन कतेक रविवर्मा कते
घास छीलथि वाग्मतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते
छथि हेड़ाएल महिसवारक हेड़मे
अन ने छै कैंचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे?
उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे॥

(ङ) "कान पाथिकेँ सुनब पहर भरि।
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार॥
भीजब हम भरिपोख पहर भरि।
बदरा बरसओं मूसलाधार॥
चोभब राढ़ी आम भदईया,
सलहेसक हम करब सिङ्गार

बिसहाराक गहबर ओगरब गऽ
देखब गऽ लाबाक पथार,
सूपक मूप उझिलता अइखन
पाछाँ बरू भऽ जेता देखार,
बिला जेता भादवमे बिलकुल
मेघक लीला अपरम्पार
कान पाथि के सुनब प्रहरि भरि।
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार॥''

2. (क) 'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'मे चित्रित विरहिणी सीताक मनोदशाक वर्णन करू। 30

(ख) 'चित्रा'क नामकरणक सार्थकता पर विचार करू। 30

3. (क) ''सरस जीवनक मधुर गायक महाकवि विद्यापति सौन्दर्योपासक कवि छथि''—एहि कथनक समीक्षा करू। 30

(ख) गोविन्ददासक कवित्वशक्तिक विवेचन करू। 30

4. (क) मैथिली पद्यसाहित्यक विकासमे 'कृष्णजन्म'क स्थान निरूपित करू। 30

(ख) आधुनिक मैथिली कविताक प्रमुख प्रवृत्तिसँ परिचय कराउ। 30

Section—B

5. निम्नलिखित गद्यांशक अभिव्यंजनागत ओ कथ्यगत वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 12×5=60

(क) पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि। काजरक कल्लोल अइसन भञुह। गथले फुले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा।

कनिअराक कर अइसन नाक। सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त। वेतक साट अइसन बाँह। पारिजातक पल्लव अइसन हाथ। विकसित स्थलपद्म अइसन चरण।

(ख) चाहे मीमांसाक कर्मकांड हो वा योगक अष्टांग साधन हो वा वेदान्तक ब्रह्मज्ञान हो, सभक मूलमे एक्के भावना काज करैत छैक—भविष्यमे महत्तम आनन्दक प्राप्ति। केओ स्वर्गक स्वप्न देखैत छथि, केओ अमरत्वक कल्पना करैत छथि, केओ निरतिशय सुख चाहैत छथि। मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण—सभक एके तत्त्व छैक—आनन्दलिप्सा। साधक-गण चाहै छथि जे एहि जीवनमे अधिकसँ अधिक फीस दऽ कऽ स्वर्ग वा मोक्षक वीमा करा ली। और एहि वणिक बुद्धिकेँ 'धर्म' कहल जाइत अछि।

(ग) घरक हाइ-कमाण्ड एखन धरि इएह रहय। अइ टोकमे कोनो तेहन शक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-विनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहय। आ तकर बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइयो ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै। माइक सोझाँ अपन पौरुषक प्रदर्शनसँ बड़ संकोच भेलै। धस्स दऽ बैसि गेल।

(घ) जे व्यक्ति अपने कोनो जोगरक नै रहैए सैह समाजक आ कुलशीलक नाक झंडामे टङने फिरैए आ जकरा अपन बाँहिक भरोस रहै छै से घर-परिवार वा समाजक बोझ नै बनिकऽ अपने हाथ-पयर लाड़ब पसिन्द करैए। ...जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक। अहाँकेँ गौआसभक ओहि ठाम पेट पोसऽमे मर्यादा देखाइत अछि आ हमरा एहन जीवन मरणतुल्य बुझाइत अछि।

(ङ) मुदा किछुए क्षणक वार्त्तालापमे ई बूझ'मे भाङठ नहि रहल जे उदास मुँहवाली एहि स्त्रीमे किछु से विशेषता अछि जे अनकामे नहि छैक। ई साधारण स्त्री जकाँ जे नीक भानस कर'मे... पतिक सेवा कर'मे... सासुक फज्झति सून'मे... उपनयन-विवाहमे जोर-जोरसँ गीत गाब'मे, दुर्गास्थान, सेमरिया, बैद्यनाथक भीड़क प्रचण्ड धक्का सह'मे जीवन सार्थक बुझैछ, ... नहि छथि। फुलपरासवाली हमर ई भौजी किछु विशिष्ट अवस्से।

6. (क) किरणजीक 'मधुरमनि' कथाक समीक्षा करू। 30

(ख) 'लोरिक विजय' मणिपद्मक विलक्षण कृति अछि—युक्तियुक्त प्रतिपादन करू। 30

7. (क) नाट्यकलाक दृष्टिसँ 'भफाइत चाहक जिनगी'क विशेषता देखाउ। 30

(ख) ''पृथ्वीपुत्र' कोनो वर्गविशेष अथवा समाजविशेषक नहि अपितु मानवजातिक मूलभूत भावना ओ वासनाक चित्र उपस्थित करैत अछि''—सयुक्ति विवेचन करू। 30

8. (क) ''खट्टर कका अपन भांगक तरंगमे चुटकी बजबैत उनटे गंगा बहा दैत छथि''—'खट्टर ककाक तरंग'क आलोकमे एहि उक्तिक सार्थकता सिद्ध करू। 30

(ख) ''कवि राजकमलकेँ लोक बिसरि जाएत, मुदा कथाकार राजकमल मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अमर रहताह''—एहि कथनपर विचार करू। 30

★ ★ ★